जींद में जाट हारे, उनकी चौधराहट डूबी, भाजपा की चाल कामयाब रही

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

जींद: जींद उपचुनाव का नतीजा आपको पता चल गया होगा। वही नतीजा आया जो मजदूर मोर्चा ने अपने पिछले अंक में लिखा था कि वहां बीजेपी जीतने जा रही है और कांग्रेस तीसरे नंबर पर रहेगी। इस बार हम यह विश्लेषण करने जा रहे हैं कि हरियाणा की राजनीति के लिए यह चुनाव कितना महत्वपूर्ण था लेकिन जींद की जनता ने मौका खो दिया। जींद से भाजपा के जिस कृष्ण मिड्ढा को उन्होंने चुना है, वह चंद महीने ही विधायक रहने वाले हैं क्योंकि हरियाणा विधानसभा के चुनाव आम लोकसभा चुनाव के साथ ही होने की प्रबल संभावना है। लेकिन इस उपचुनाव ने हरियाणवी राजनीति का पूरा सीन बदल दिया है। इसलिए जींद उपचुनाव का विश्लेषण हम अलग तरीके से कर रहे हैं।

जाट राजनीति का बंटाधार किया भाजपा ने

हरियाणा की जाट बेल्ट के लोगों को अभी एहसास नहीं होगा, लेकिन उन्हें बहुत जल्द एहसास होगा कि उन्होंने कितनी बड़ी गलती की है। भाजपा सशक्त जाट नेतृत्व से हमेशा महरूम रही है। उसके परंपरागत वोटर पंजाबी समुदाय के लोग रहे हैं। भाजपा अभी गणित लगा ही रही थी कि संयोग से चौटाला खानदान में फूट पड़ गई और भाजपा ने मौके का पूरा फायदा उठा लिया। जींद में जाटों का वोट तीन जगह बंट गया, जननायक जनता पार्टी (जेजेपी), इनैलो और कांग्रेस ने जाट प्रत्याशी खड़े किए थे, जबकि भाजपा ने पंजाबी प्रत्याशी खड़ा किया था।

जींद उपचुनाव में शुरुआती मुद्दा विकास का था और इस मुद्दे को जब शुरुआती दौर में हवा मिली तो मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर को अपनी नाव डूबती नजर आई। इसी वजह से उन्होंने अपने सारे मंत्रियों की फौज जींद उपचुनाव में उतार दी। भाजपा ने अपने प्रचार तंत्र के सहारे विकास के मुद्दे की बात को जातिगत मुद्दे की तरफ मोड़ दिया। इस काम की मदद के लिए भी उन्होंने अपने पुराने मोहरे राजकुमार सैनी को इस्तेमाल किया। इस उपचुनाव से साफ हुआ कि रामकुमार सैनी सिर्फ भाजपा के इशारे पर ही जाटों को गाली देने का काम करता है। ताकि अगर जाटों में कोई सभी समुदायों को साथ लेकर चलने वाला देवीलाल जैसा नेता उभरे तो उसे रोका जा सके।

जींद उपचुनाव जैसे ही विकास की बजाय जातिगत मुद्दे की तरफ बढ़ा, जाटों के वोट भी बंटने लगे। हालांकि जेजेपी प्रत्याशी दिग्विजय चौटाला दूसरे नंबर पर और तीसरे नंबर पर रणदीप सुरजेवाला रहे। इनमें से अगर एक ही प्रत्याशी सामने होता तो जाटों के वोटों का विभाजन नहीं होता। जाटों की कुछ वोट इनैलो उम्मीदवार को भी गए। इस तरह जाट वोट बिखर कर रह गया।

जाट उम्मीदवार खड़ी करने वाली इनैलो प्रत्याशी उम्मेद सिंह को 3454 वोट मिले, कांग्रेस के रणदीप सुरजेवाला को 22740 वोट मिले और जेजेपी के दिग्विजय सिंह चौटाला को 37631 वोट मिले। अगर एक जाट कैंडिडेट होता तो ये सारे वोट मिलकर बनते हैं 63815 जबकि भाजपा प्रत्याशी कृष्ण मिड्ढा को 50566 वोट मिले। यह बहुत आसान सा गणित था, जिसे जींद-रोहतक के पढ़े लिखे जाट पहले दिन से जानते थे लेकिन जब गलती की है तो भुगतने को भी तैयार रहें। जाट चौधर को इतनी बुरी तरह तहस नहस आज तक कोई पार्टी नहीं कर पाई थी लेकिन भगवा पार्टी ने एक झटके में चौधरियों की पगड़ी को रौंद डाला।

इनैलो और अभय चौटाला खारिज

अगर आप जाट कैंडिडेट्स को मिले वोट पर नजर डालें तो इनैलो प्रत्याशी यानी ओमप्रकाश चौटाला और अभय चौटाला के प्रत्याशी को कुल 3454 जाटों ने वोट डाले और प्रत्याशी की जमानत जब्त करा दी। इस आंकड़े से साफ है कि जींद के जाटों ने अभय चौटाला की राजनीति को खारिज कर दिया। इसके मुकाबले उन्हें नई पार्टी जेजेपी में ज्यादा उम्मीदें दिखीं। लेकिन इन हालात में जींद के जाट यह भी तो कर सकते थे कि वह रणदीप सुरजेवाला को भी ज्यादा गंभीरता से नहीं लेते तो कम से कम जेजेपी आसानी से जीत जाती या फिर जाटों को चाहिए था कि वे जेजेपी को भी खारिज करते और रणदीप पर बड़ा दांव खेल देते। बहरहाल, जाट मतदाताओं से गलती तो हो ही चुकी है। लेकिन अभय चौटाला का खारिज होना, जींद उपचुनाव से बहुत बड़ा संकेत मिला है। यह भविष्य में इनैलो की राजनीति को भी प्रभावित कर सकता है। अभय चौटाला की राजनीतिक पूछ अब बाकी दलों में भी कम हो जाएगी। भाजपा भी नहीं चाहेगी कि चौटाला खानदान में कोई एकता वार्ता चले और पूरा परिवार फिर से एकसाथ खड़ा नजर आए। जींद से जो समीकरण उभरे हैं, वह भाजपा के अनुकूल हैं।

कांग्रेस कैसे लड़ेगी विधानसभा चुनाव

रणदीप सुरजेवाला खुद तो हारे ही लेकिन उनकी वजह से कांग्रेस की इज्जत भी मिट्टी में मिल गई। इन हालात के लिए पूर्व सीएम भूपेंद्र सिंह हुड्डा कम जिम्मेदार नहीं हैं। वह भला एक और भावी सीएम कैंडिडेट को कैसे जीतने देते। कांग्रेस आलाकमान ने भी रणदीप सुरजेवाला को जींद से उतारकर बहुत परिपक्वता का परिचय नहीं दिया। इससे उल्टा गुटों में बंटी कांग्रेस में जाट लीडरशिप को लेकर लड़ाई और तेज हो गई। भूपेंद्र सिंह हुड्डा जानते थे कि रणदीप की जीत का मतलब है कि अगला विधानसभा चुनाव भी रणदीप के नेतृत्व में कांग्रेस लड़ती। इसलिए हुड्डा की तरफ से साफ संकेत था कि वह रणदीप की उम्मीदवारी से खुश नहीं हैं। उन्हे जिस तरह जींद उपचुनाव में प्रचार करना चाहिए था, वह उन्होंने नहीं किया।

इस हार की वजह को हालांकि रणदीप और अभय ने ईवीएम पर भी जिम्मेदारी डाली है। लेकिन यह बात गले नहीं उतरती। जाट वोटों का विभाजन सारी कहानी खुद बयान कर रहा है।

भाजपा वालों यह क्षणिक खुशी है

भाजपा ने भले ही जींद उपचुनाव में मैदान मार लिया है लेकिन यह उसकी क्षणिक खुशी है। इकलौते चुनाव को जब मनोहर लाल खट्टर अपनी कुर्सी बचाने के लिए खुद लड़ रहे थे तो ऐसा नतीजा आना ही था। लेकिन जरूरी नहीं कि विधानसभा चुनाव में एक बार फिर विकास का मुद्दा उठे और उन हालात में भाजपा का उसका सामना करना नामुमकिन होगा। अगर जाट वोट नहीं बंटा होता तो यह चुनाव नतीजा कुछ और होता। इसलिए भाजपा को बहुत खुशफहमी में नहीं जीना चाहिए। जरूरी नहीं कि जींद हर जगह दोहराया जाए। भाजपा अगर वाकई संजीदा है तो उसे अपनी जाट लीडरशिप खड़ी करनी होगी, तभी जाट बेल्ट में उसे स्वीकार किया जाएगा।

उपायुक्त के आदेश पर सांगवान पुनः बीके अस्पताल में तैनात

फ़रीदाबाद (म.मो.) गतांक में सुधी पाठकों ने पढा था कि घोटालेबाज फ़ार्मासिस्ट विरेन्द्र सांगवान को तत्कालीन सिविल सर्जन माही ने बीके अस्पताल से बाहर का रास्ता दिखाते हुए वापस सिविल अस्पताल बल्लबगढ भेज दिया था। दिनांक 31 दिसम्बर को रिटायर हुए सिविल सर्जन बीर सिंह सहरावत को मोहरा बनाकर सांगवान ने अच्छे खासे वित्तीय घोटाले बड़ी ही सफ़ाई से अंजाम दिये थे। मजे की बात तो यह है कि वह अपनी कलम से कुछ नहीं करता क्योंकि उसके पास कलम है ही नहीं, लेकिन वह सहरावत जैसे लोग़ों को मूर्ख बना कर उनकी कलम से तमाम तरह के घोटाले कराता है। इनका कुछ विवरण 'मज़दूर मोर्चा' के पिछले अंकों में प्रकाशित किया जा चुका है।

फ़ार्मासिस्ट सांगवान की असल तैनाती तो सिविल अस्पताल बल्लबगढ में है; परंतु वहां घोटाले करने का पर्याप्त स्कोप न होने के चलते वह हमेशा जुगाड़बाज़ी करके बीके में अतिरिक्त तैनाती करा लेता है बीके में आने के बाद फ़िर वह किसी मलाईदार तैनाती का प्रयास करता है। पूर्व सिविल सर्जनों -डॉ. राजोरा व डॉ. असरुद्दीन ने उसे बिल्कुल घास नहीं डाली और न ही किसी अधिकारी से वह उन दोनों पर दबाव बनवा सका। और तो और कार्यवाहक सिविल सर्जन माही पर भी दबाव डालने की हिम्मत उपायुक्त की भी नहीं हुई। परन्तु गुलशन अरोड़ा के चार्ज सम्भालते ही उपायुक्त अतुल द्विवेदी ने उन्हें डांटते हुए कहा कि सांगवान को वापस बीके में तैनात करो और डॉ. अरोड़ा जी ने उसे फ़िर से बीके में तैनात कर दिया। जानकारों के मुताबिक बेनीवाल नामक किसी डीईटीसी की सिफ़ारिश पर उपायुक्त ने सिविल सर्जन पर सांगवान के लिये दबाव डाला था।

बीके में आते ही सांगवान ने पीएमओ (प्रिंसिपल मेडिकल ऑफ़िसर) के सामने वाले एक कमरे में अपनी बैठक लगा कर बद्तमीजियां शुरू की तो डॉक्टरों सहित अन्य स्टाफ़ ने इसका कड़ा विरोध किया। डॉ. माही, जो अब फ़िर से कार्यवाहक सिविल सर्जन व पीएमओ का कार्य कर रहे हैं क्योंकि डॉ. अरोड़ा की ड्यूटी कुम्भ मेले में लगा दी गयी है, ने सांगवान को उस कमरे से निकलने का आदेश दे दिया। डॉक्टरों व स्टाफ़ का कहना है कि वह सब के साथ बदतमीज़ी करता है, हर वाक्य के साथ गाली उसका तकिया कलाम है।

वह खुद तो कुछ करता नहीं और दूसरों को कुछ करने देता भी नहीं। बताते हैं कि स्टाफ़ का एक बड़ा हिस्सा उसके विरुद्ध लामबंद हुआ खड़ा है। यदि प्रशासन ने सांगवान को नकेल न डाली तो स्टाफ़ कोई बड़ा कदम भी उठा सकता है। इस तरह की सूचना चंडीगढ स्थित मुख्यालय को भेज दी गयी है।

आरएसएस ने 1948 में तिरंगे को पैरों तले रौंदा था !

बीजेपी आज क्यों इतनी ज्यादा राष्ट्रप्रेम की बात करती है शायद इसलिए कि बीजेपी की मातृ संस्था आरएसएस ने आज़ादी की लड़ाई में कभी हिस्सा नहीं लिया था. 1930 और 1940 के दशक में जब आज़ादी की लड़ाई पूरे उफान पर थी तो आरएसएस का कोई भी आदमी या सदस्य उसमें शामिल नहीं हुआ था. यहाँ तक कि जहां भी तिरंगा फहराया गया आरएसएस वालों ने कभी उसे सैल्यूट तक नहीं किया. आरएसएस ने हमेशा ही भगवा झंडे को तिरंगे से ज्यादा महत्व दिया. 30 जनवरी 1948 को जब महात्मा गाँधी की हत्या कर दी गयी तो इस तरह की खबरें आई थीं कि आरएसएस के लोग तिरंगे झंडे को पैरों से रौंद रहे थे. यह खबर उन दिनों के अखबारों में खूब छपी थीं. आज़ादी के संग्राम में शामिल लोगों को आरएसएस की इस हरकत से बहुत तकलीफ हुई थी. उनमें जवाहरलाल नेहरू भी एक थे. 24 फरवरी को उन्होंने अपने एक भाषण में अपनी पीड़ा को व्यक्त किया था. उन्होंने कहा कि खबरें आ रही हैं कि आरएसएस के सदस्य तिरंगे का अपमान कर रहे हैं. उन्हें मालूम होना चाहिए कि राष्ट्रीय झंडे का अपमान करके वे अपने आपको देशद्रोही साबित कर रहे हैं.

यह तिरंगा हमारी आज़ादी के लड़ाई का स्थायी साथी रहा है, जबकि आरएसएस वालों ने आज़ादी की लड़ाई में देश की जनता की भावनाओं का साथ नहीं दिया था. तिरंगे की अवधारणा पूरी तरह से कांग्रेस की देन है. तिरंगे झंडे की बात सबसे पहले आन्ध्र प्रदेश के मसुलीपट्टम के कांग्रेसी कार्यकर्ता पी वेंकय्या के दिमाग में उपजी थी. 1918 और 1921 के बीच हर कांग्रेस अधिवेशन में वे राष्ट्रीय झंडे को फहराने की बात करते थे. महात्मा गाँधी को यह विचार तो ठीक लगता था लेकिन उन्होंने वेंकय्या जी की डिजाइन में कुछ परिवर्तन सुझाए. गाँधी जी की बात को ध्यान में रखकर दिल्ली के देशभक्त लाला हंसराज ने सुझाव दिया कि बीच में चरखा लगा दिया जाए तो ज्यादा सही रहेगा. महात्मा गाँधी को लालाजी की बात अच्छी लगी और थोड़े बहुत परिवर्तन के बाद तिरंगे को राष्ट्रीय ध्वज के रूप में स्वीकार कर लिया गया. उसके बाद कांग्रेस के सभी कार्यक्रमों में तिरंगा फहराया जाने लगा. अगस्त 1931 में कांग्रेस की एक कमेटी बनायी गयी, जिसने झंडे में कुछ परिवर्तन का सुझाव दिया. वेंकय्या के झंडे में लाल रंग था. उसकी जगह पर भगवा पट्टी कर दी गयी. उसके बाद सफ़ेद पट्टी और सबसे नीचे हरा रंग किया गया. चरखा बीच में सफ़ेद पट्टी पर सुपर इम्पोज कर दिया गया. महात्मा गाँधी ने इस परिवर्तन को सही बताया और कहा कि राष्ट्रीय ध्वज अहिंसा और राष्ट्रीय एकता की निशानी है.

आज़ादी मिलने के बाद तिरंगे में कुछ परिवर्तन किया गया. संविधान सभा की एक कमेटी ने तय किया कि उस वक़्त तक तिरंगा कांग्रेस के हर कार्यक्रम में फहराया जाता रहा है लेकिन अब देश सब का है. उन लोगों का भी जो आज़ादी की लड़ाई में अंग्रेजों के मित्र के रूप में जाने जाते थे. इसलिए चरखे की जगह पर अशोक चक्र को लगाने का फैसला किया गया. जब महात्मा गाँधी को इसकी जानकारी दी गयी तो उन्हें ताज्जुब हुआ. बोले कि कांग्रेस तो हमेशा से ही राष्ट्रीय रही है. इसलिए इस तरह के बदलाव की कोई ज़रुरत नहीं है, लेकिन उन्हें नयी डिजाइन के बारे में राजी कर लिया गया. इस तिरंगे की यात्रा में बीजेपी या उसकी मालिक आरएसएस का कोई योगदान नहीं है, लेकिन वह उसी के बल पर कांग्रेस को राजनीतिक रूप से घेरने में सफल होती नज़र आ रही है. अजीब बात यह है कि कांग्रेस सहित सभी राजनितिक दल अपने इतिहास की बातें तक नहीं कर रहे हैं.

अगर वे अपने इतिहास का हवाला देकर काम करें तो बीजेपी और आरएसएस को बहुत आसानी से घेरा जा सकता है और तिरंगे और देश भक्ति के नाम पर राजनीति करने से रोका जा सकता है।

FASHION.IN

Available all types of
ladies cotton kurties, Fancy Kurties,
Jegin, legin, Fancy Top,
T-Shirts, Trousers and imported
material in wholesale price.

SPECIALITY IN FANCY TOP & FANCY KURTIES

लेडीज कपड़ों पर भारी छूट
एक बार सेवा का मौका अवश्य दें

Address : 5M/22, N.I.T. FARIDABAD NEAR DAYANAND WOMEN COLLEGE, ST. JOSEPH CONVENT SCHOOL ROAD . 9911489490